COALITION
Food & Nutrition
SECURITY

महिला एवं बाल विकास विभाग
मध्यप्रदेश

बदलाव की कहानियाँ

मध्य प्रदेश

दृढ़ निश्चयी ही बदलाव लाते हैं!

अभिस्वीकृति

यह रिपोर्ट पोषण चैंपियनों के सफलता की कहानियों की एक झलक दिखाती है, जिन्होंने संबंधित क्षेत्रों में गंभीर कुपोषण के समुदाय आधारित प्रबंधन के माध्यम से बच्चों के पोषण की स्थिति में सुधार लाने के लिए अपनी क्षमता से परे जाकर काम किया। उन्होंने प्रमुख भागीदारों को सफलतापूर्वक अपने काम से जोड़ने और समुदाय की सहभागिता के महत्व को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उनके योगदान की बहुत सराहना की गई है और उनकी ये कहानियां अन्य व्यक्तियों को भी समस्त राज्य में पोषण की स्थिति में सुधार लाने के लिए योगदान करने को प्रेरित करेगी। आशा की जाती है कि यह दस्तावेज पोषण अभियान के समग्र लक्ष्य को प्राप्त करने के संदर्भ में समुदाय की सहभागिता को बढ़ावा देने में अन्य राज्यों के लिए भी एक उपयोगी संदर्भ बनेगा।

पोषण गठबंधन मध्यप्रदेश सरकार के महिला एवं बाल विकास विभाग से **डॉ. राम राव भोंसले** (निदेशक), **श्रीमती स्वाति मीणा नायक** (पूर्व निदेशक), **सुश्री स्वर्णिमा शुक्ला** (संयुक्त निदेशक - एबीएम), **श्री गोविंद सिंह रघुवंशी** (अतिरिक्त निदेशक - एबीएम) को उनके सहयोग और इनपुट के लिए उनके प्रति सच्ची कृतज्ञता व्यक्त करता है। मैदानी स्तर पर हमें **होशंगाबाद और खंडवा** जिले में महिला एवं बाल विकास विभाग के सभी अधिकारियों का पूरा सहयोग प्राप्त हुआ, जिनके बिना इस दस्तावेज को पूरा करना संभव नहीं था। CFNS दोनों जिलों के जिला परियोजना अधिकारियों, पर्यवेक्षकों और इन जिलों के चुने हुए विकासखंडों की आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं की भी उनकी महत्वपूर्ण भूमिका के लिए सराहना करता है।

हम मध्यप्रदेश में अपने दोनों सहयोगियों, WORLD VISION INDIA और EFICOR का भी क्रमश: होशंगाबाद और खंडवा जिलों में समुदाय के साथ बैठकों के आयोजनों में लिए धन्यवाद व्यक्त करते हैं।

हम UNICEF- मध्यप्रदेश और State Centre of Excellence (SCoE) के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए इस गतिविधि में सहायता प्रदान करने के लिए उनकी सराहना करते हैं।

इस गतिविधि में उपरोक्त उल्लिखित व्यक्तियों के सहयोग ने हमें समुदाय के सदस्यों के सराहनीय प्रयासों को उनकी अपनी कहानियों के माध्यम से सामने लाने में सहायता की है।

योगदानकर्ता

कोअलिशन फॉर फूड एंड न्यूट्रीशन सिक्योरिटी (CFNS) की तरफ से

कहानियों का संकलन और संग्रहण- श्रीमती लुब्ना अब्दुल्ला, राज्य कार्यक्रम प्रमुख, मध्यप्रदेश

समीक्षा और दस्तावेजीकरण- डॉ. तृप्ति कुमार, सहायक प्रबंधक, संचार एवं नॉलेज प्रबंधन

पोषण चैंपियन/पोषण वीर - दृढ़ निश्चयी ही बदलाव लाते हैं!

कुपोषण के लिये, चाहे वह किसी भी रूप में हो, व्यक्तियों, परिवारों और पूरे राष्ट्र को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से भारी कीमत चुकानी पड़ती है। भारत में लगभग दस लाख बच्चे अति गंभीर कुपोषण (SAMs) से पीड़ित हैं, यह स्थिति विशेष रूप से चिंताजनक है क्योंकि इस तरह के बच्चों में अच्छी तरह से पोषित बच्चों की तुलना में मृत्यु की संभावना, नौ गुना अधिक होती है। प्रत्येक वर्ष अति गंभीर कुपोषित (SAM) और गंभीर कुपोषण (MAM) से पीड़ित हजारों भारतीय बच्चे बगैर इलाज के रह जाते है; उनमें से अनेक बच्चे मृत्यु का शिकार हो जाते है और जो जीवित रह जाते है उनके आजीवन दुर्बल रहने की संभावना रहती है। हाल ही में किये गये एक अध्ययन के अनुसार LMICs में बच्चों में कमजोरी में वृद्धि के कारण 18 से 23 प्रतिशत अधिक बच्चों की मृत्यु का अनुमान है जो कि स्वास्थ्य प्रणालियों में आये अवरोध और कोविड-19 महामारी के दौरान पर्याप्त भोजन न मिलने के कारण हुई है। इसलिए अति गंभीर कुपोषित बच्चों को जल्दी पहचानने, उन पर ध्यान देने और उन्हें सुविधा केन्द्र में और घर जाने के बाद उनकी निरन्तर देखभाल का प्रबन्ध किये जाने की आवश्यकता है।

कुपोषण के 'समुदाय-आधारित प्रबंधन' के लिए प्राथमिक रूप से प्रणाली के भीतर ही ऐसे औपचारिक या अनौपचारिक कार्यकर्ताओं की आवश्यकता होती है जिन्हें मानव पोषण का बुनियादी ज्ञान हो और जिन्हें अपने समाज में पोषण और स्वास्थ्य को बढ़ावा देने का उत्साह हो। CFNS ने इस आवश्यकता को पहचाना और मध्यप्रदेश में समुदाय के भीतर ही "पोषण - चैंपियंस" या "पोषण-वीर" की खोज कर उनके माध्यम से इस दिशा में कार्य किया।

'पोषण चैंपियंस' या 'पोषण वीर' हाल ही की एक अवधारणा है, जिसके अनुसार ये वो लोग है जो समुदाय के लोगों को प्रेरित करने, प्रोत्साहित करने, बदलाव लाने और साथ ही स्थानीय संगठनों को मजबूत करने में सक्षम होते हैं। वे समुदाय के निर्माण और उसे बनाये रखने तथा पोषण के लिये कार्यक्रम की प्रतिबद्धता के लिये महत्वपूर्ण होते हैं। इन दिनों ये धारणा बलवती होती जा रही है कि ये 'चैंपियन्स' पोषण व्यवस्था, अभिसरण, व्यवहार, आदतों को प्रभावित करने और दृष्टिकोण में बदलाव लाने के लिए सामुदायिक स्तर पर सामूहिक इच्छा निर्मित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सशक्तिकरण की इस प्रक्रिया में, ये 'चैंपियंस' अपने ज्ञान, नेटवर्किंग, संपर्क और पारस्परिक कौशल के माध्यम से सुविधाकर्ता, मध्यस्थ, समुदाय उत्प्रेरक, जागरूकता निर्माता, संचारक आदि के रूप में बहुआयामी भूमिका निभाते हैं। स्थानीय स्तर पर विषम परिस्थितियों में विशेष रूप से कुछ सबसे कठिन और कम सक्रिय समुदायों के साथ भेंट के दौरान ये बहुत महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकते है और ये सेवा योजना बनाने, सेवाएं प्रदान करने में बहुत ही गहरी समझ और अनुभव के कारण महत्वपूर्ण संसाधन हो सकते हैं।

पोषण के बारे में सूचना, ज्ञान और जागरूकता के प्रसार तथा बाल कुपोषण के संबंध में गांव, ब्लॉक, जिला और राज्य स्तर की गतिविधियों को सुचारू रूप से संचालित करने के लिए CFNS विभिन्न स्तरों पर 'पोषण चैंपियंस' की भागीदारी की पुरजोर वकालत करता है। इसका मुख्य उद्देश्य बाल पोषण सुनिश्चित करने के लिये 'पोषण चैंपियंस' के माध्यम से समुदायों को उत्प्रेरित करना है।

मध्य प्रदेश में, CFNS ने इन 'पोषण चैंपियंस' की उपलब्धियों के विस्तार, प्रभाव और निरंतरता जैसे कुछ मानदंडों के आधार पर प्रेरक उपलब्धियों का दस्तावेजीकरण किया गया है। जिसमें हितधारकों का चित्रण कर जिला/ब्लॉक अधिकारियों के परामर्श से, या FLWs अथवा समुदाय आदि के साथ बातचीत/बैठकों के माध्यम से स्थानीय चैंपियनों की पहचान की

गई है। समुदाय, ब्लॉक और जिला स्तर पर स्थित इन पोषण चैंपियन्स की इन कहानियों के दस्तावजीकरण का उद्देश्य अपने अपने क्षेत्रों में पोषण/कुपोषण के बारे में जागरूकता फैलाने के लिये अधिकतम लोगों तक पहुंचना है। न्यूज लेटर/ सोशल मीडिया आदि के माध्यम से पोषण चैंपियंस के योगदान को प्रकाश में लाने से अनेक मंचों पर उनके प्रयासों को मान्यता मिलती है।

इन चैंपियन्स का व्यक्तिगत सशक्तिकरण, विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से, SAM और MAM के स्थायी प्रबंधन के क्षेत्र में जमीनी स्तर पर कार्य कर रहे संगठनों और आमजन के बीच विश्वास पैदा करने तथा जागरूकता बढ़ाने की दिशा में महत्वपूर्ण हो सकता है। इससे यह सुनिश्चित होगा कि 'पोषण चैंपियन' के रूप में अनेक परिवर्तन कारकों की सहायता से समुदाय-आधारित प्रबंधन को वांछित तरीके से लागू करने के लिए समुदाय तैयार है। निम्नलिखित खंड में प्रेरक परिवर्तन एजेंट अर्थात "पोषण चैंपियंस" की कुछ कहानियों का वर्णन किया गया है।

[1]यूनिसेफ, बच्चों में गंभीर तीव्र कुपोषण का प्रबंधन: बड़े पैमाने पर परिणामों की दिशा में काम करना। यूनिसेफ कार्यक्रम मार्गदर्शन दस्तावेज। 2015. न्यूयॉर्क, एनवाई।

[2]रॉबर्टन, टी, कार्टर, ईडी, एट अल। निम्न-आय और मध्यम आय वाले देशों में मातृ एवं शिशु मृत्यु दर पर COVID-19 महामारी के अप्रत्यक्ष प्रभावों का प्रारंभिक अनुमान: एक मॉडलिंग अध्ययन। लैंसेट ग्लोबल हेल्थ 2020। 12 मई, 2020

[3]Davies, R. सामुदायिक स्वास्थ्य चैंपियन: स्वास्थ्य असमानताओं की चुनौती को अनलॉक करने की कुंजी में से एक? स्थानीय आर्थिक रणनीति केंद्र (CLES)। 2009.

पोषण चैंपियन और उनकी CMAM सफलता की कहानियां

बेहतर जीवन के लिये पोषण !

दक्षिण-पूर्वी मध्य प्रदेश में स्थित मात्र पचास गोंड आदिवासी परिवारों का एक छोटा सा गांव, चेडका, पहले से ही निम्न स्तरीय स्वास्थ्य व पोषण सूचकांकों के लिए राष्ट्रीय स्तर पर चर्चा में है। केवल हाल के कुछ वर्षों में होशंगाबाद जिले के सोहागपुर के चेडका के ग्रामीण जनजातीय क्षेत्रों में कायापलट कर देने वाले कुछ छोटे छोटे परिवर्तनों ने अपनी जड़ें जमाना आरम्भ किया है।

ऐसा प्रतीत होता है चेड़का के मुकेश टेकाम के दृढ़ निश्चय ने गांव में स्वास्थ्य और पोषण की स्थिति को फिर से परिभाषित किया है। अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद, मुकेश ने अपने पिता के कामकाज में हाथ बंटाने के उद्देश्य से अपनी पुश्तैनी वन भूमि के एक छोटे से टुकड़े पर कड़ी मेहनत से कृषि का काम आरम्भ किया। हालांकि वनोपज ही उनके जीविकोपार्जन का एकमात्र स्रोत है; किन्तु दूर स्थित स्थानीय बाजारों में इसे बेचने में लगने वाले कठिन परिश्रम ने इसे कम लाभकारी बना दिया है। मुकेश के शिक्षित मन ने आजीविका की इस पारंपरिक प्रथा को बदलने की इच्छा को बलवती किया, इस इच्छा ने उसके जुझारू स्वभाव को उत्प्रेरित किया और आज वह गाँव का एक प्रसिद्ध व्यक्ति बन गया है। उसने ग्राम सभाओं, जो कि ग्राम विकास के लिए पंचायती राज प्रणाली का मूल आधार है, में बहुत सक्रिय रूप से भाग लेना शुरू कर दिया । उसने कृषि, शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छता और सामुदायिक कल्याण केंद्र के स्थानीय प्रशासनिक मुद्दों को बैठकों के दौरान चर्चा और कार्य योजना में लाकर सरपंच और अन्य पंचायत सदस्यों का विश्वास अर्जित किया। साथ ही उसने अनुसूचित जनजातियों के लिए विभिन्न सरकारी योजनाओं के बारे में समस्त जानकारियां एकत्र कर ग्राम सभा को समयबद्ध तरीके से इन योजनाओं का लाभ लेने के लिए प्रेरित किया। उनके जिम्मेदारीपूर्ण कदमों ने छोटे छोटे गांवों की गरीब जनजातियों के लोगों को राज्य की योजनाओं और अपने अधिकारों का लाभ उठाने में मदद की।

प्रसव सुरक्षित, जीवन रक्षित

मुकेश की पत्नी, जो एक आंगनवाड़ी कार्यकर्ता भी हैं, ने छोटे बच्चों के पोषण और माताओं के स्वास्थ्य की ओर मुकेश का ध्यान दिलाया। मुकेश ने संस्थागत प्रसव और सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाओं का लाभ लेने के संदर्भ में जागरूकता बढ़ाने में अपनी पत्नी की सहायता की। उसने समुदाय को प्रसवपूर्व तैयारियों के बारे में बताया और परिवारजनों को संस्थागत प्रसव के लिए प्रोत्साहित किया। निकटतम सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र गाँव से लगभग 3 किलोमीटर दूर है और गाँव में परिवहन के साधन सीमित हैं, जिससे माताओं को संस्थागत प्रसव, इलाज अथवा दवाएँ लेने के लिए अस्पताल जाना मुश्किल हो जाता है। लोगों को बुनियादी स्वास्थ्य सेवाओं के लिये कई किलोमीटर की यात्रा करनी पड़ती है। यह स्थिति अब बेहतर हो रही है क्योंकि मुकेश ने अनेक परिवारों को संस्थागत प्रसव के महत्व के बारे में बताया और प्रेरित किया है। परिवारों को ऐसे कार्यकर्ता सहयोग करते है जिनके पास अपने स्वयं के वाहन हैं। इन कार्यकर्ताओं को मुकेश ने ही यह कार्य करने के लिये प्रेरित किया है। अब तो ग्राम सभा की प्रेरणा से अन्य पंचायतों से भी कार्यकर्ता सहायता करने के लिये आगे आने लगे है। इन कार्यकर्ताओं के सम्पर्क नम्बर आंगनवाड़ी कार्यकर्ता के साथ-साथ गर्भवती महिलाओं के परिजनों को भी दे दिये जाते है और ये कार्यकर्ता गर्भवती महिलाओं को अस्पताल ले जाने में सहायता करते हैं। इस प्रकार गाँव में संस्थागत प्रसव सुनिश्चित हो जाता है और गर्भवती और स्तनपान कराने वाली माताओं को प्रसवपूर्व और प्रसवोत्तर जांच के दौरान संपूर्ण सहायता प्रदान की जाती है जिससे परिजनों में सुरक्षा की भावना आती है। मुकेश ने अपनी पत्नी के साथ मिलकर ग्राम सभा की सहायता से एक और सराहनीय प्रयास किया, वो यह कि उसने ये सुनिश्चित किया कि आंगनवाड़ी केंद्र में पूरक खाद्य पदार्थ और आवश्यक दवाएं भरपूर मात्रा में रहे ताकि बुनियादी चिकित्सा सुविधाएं ग्रामीणों के घर तक पहुंच सकें। ग्रामीणजन अब अपने स्वास्थ्य और अधिकारों के प्रति और अधिक जागरूक हो रहे हैं।

हर आंगन महके पोषण बगिया

मुकेश ने बच्चों और परिजनों के पोषण स्तर को सुधारने में आहार विविधता के महत्व को जानते हुए खेती के अपने ज्ञान और अनुभव का लाभ लेकर अपने घर के पिछले हिस्से में पोषणवाटिका विकसित की। ताजी सब्जियां उगाने के फायदों को देखते हुए उसने एक कार्यशाला में उपलब्ध कराए गए पौधों से टमाटर, बैंगन, मैथी, पालक और धनिया की बुवाई की। सब्जियों को अच्छी तरह से बढ़ता देख उसने समुदाय के अन्य सदस्यों को भी ऐसा करने के लिए प्रोत्साहित किया। उसने उन्हें सब्जियों को उगाने के तरीके सिखाए और बीज और पौधे उपलब्ध कराए। उसके सतत प्रयासों के परिणामस्वरूप अब क्षेत्र के लगभग हर घर में एक छोटा पोषण-उद्यान है जिससे ताजी और विविध प्रकार की सब्जियाँ उपलब्ध होती हैं । लोग अपने पड़ोसियों के साथ आपस में इन सब्जियों का आदान-प्रदान भी करते हैं जिससे लोगो के आहार में विविधता आती है। मुकेश यह देखकर बहुत खुश हैं कि इस बदलाव के कारण अब कई घरों के पिछले हिस्से में छोटे बच्चों, किशोरों और महिलाओं के संतुलित आहार और पोषण के लिए ताजी सब्जियां और मौसमी फलों की आपूर्ति लगातार होती रहती हैं।

आदिवासी जीवन का संघर्ष और उनकी कठोर जीवन निर्वहन दशा के तनाव सुर्खियां नहीं बनते, बल्कि मुकेश जैसे चमकीले सितारे ही हैं जो सकारात्मक बदलाव लाते हैं। मुकेश मुस्कुराते हुए कहते हैं, "मेरे संघर्ष का कोई अंत नहीं है, लेकिन मुझे यकीन है कि मैंने सही रास्ता चुना है, नहीं तो लोग अब तक कैसे मेरा अनुसरण करते। उनके कल्याण में ही मेरी खुशी है!"

अच्छे लालन-पालन के लिए पोषण!

रेखा अहिरवार लगभग 15 साल पहले शादी के बाद सोहागपुर तहसील के कलमेशरा गाँव में आई थी। एक छोटा सा गाँव, कलमेशरा, अभी भी गरीबी के प्रभाव में है, यही गरीबी गाँव के बच्चों में कुपोषण का प्रमुख कारण है। रेखा एक पढ़ी-लिखी महिला थीं और उसमें दूसरों की सेवा करने की भावना थी। वह भाग्यशाली थी कि परिवार की बहू होने के बाद भी उसे काम पर जाने के लिए अपने पति और परिवार का समर्थन मिला। रेखा की दिनचर्या किसी भी अन्य कामकाजी महिला से बहुत अलग नहीं है। वह दो बच्चों की मां है और काम पर जाने के पहले सुबह जल्दी उठकर घर का सारा काम करती है ।

काउंसलर के रूप में काम करते हुए गांव में पोषण की स्थिति देखकर परेशान रेखा के मन में ग्रामीणों में बाल स्वास्थ्य और पोषण के बारे में जागरूकता पैदा करने की इच्छा जागृत हुई । उसके अनुसार, कुपोषण का संबंध सिर्फ गरीबी या अमीरी से नहीं है बल्कि उचित जानकारी और गांव के लोगो के द्वारा सही समय पर किये जाने वाले प्रयासों से है। गाँवों में बाल स्वास्थ्य और पोषण जागरूकता पैदा करने के उसके निस्वार्थ प्रयासों और विनम्र व्यवहार ने गाँव में बच्चों की पोषण स्थिति में उल्लेखनीय सुधार को संभव बना दिया।

कुपोषण से पोषण की ओर

दिहाड़ी मजदूर के रूप में काम करने वाले एक जोड़े की तीसरी संतान, दो साल की निधि, रेखा के घर के पास रहती थी। निधि के मातापिता परिवार के लिए दिन में तीन समय के भोजन का प्रबंध नहीं कर पा रहे थे। उस परिवार को कई बार भूखे ही सोना पड़ता था। निधि का वजन काफी कम था और वह इस हद तक कमजोर थी कि वह रेंग भी नहीं पा रही थी और उसकी सेहत दिन-ब-दिन बिगड़ती जा रही थी। निधि की स्थिति पर रेखा का ध्यान गया और उसने निधि के माता-पिता से निधि की कुपोषित स्थिति और देखभाल की तत्काल आवश्यकता के संदर्भ में बात की। चूंकि निधि के माता-पिता पूरी तरह से दैनिक आय पर निर्भर थे, इसलिये उन्होंने निधि के स्वास्थ्य और पोषण के लिए समय देने और प्रयास करने में असमर्थता व्यक्त की। उनकी स्थिति को समझते हुए रेखा ने उन्हें 'समुदाय-आधारित कार्यक्रम - CSAM के बारे में बताया और निरंतर प्रयासों के बाद निधि को CSAM कार्यक्रम में नाम दर्ज करने के लिए उसके मातापिता को राजी कर लिया। CSAM के तहत, निधि की नियमित स्वास्थ्य जांच की गई, उसके वजन के अनुसार अतिरिक्त THR दिये गये और आंगनवाड़ी से औषधियां प्रदान की गई। रेखा नियमित रूप से घर और आंगनवाड़ी केंद्र में जाकर उसकी प्रगति की निगरानी करती रही। निधि, जो पहले बहुत पतली और पीली थी, उचित उपचार के बाद पूरी तरह ठीक हो गई और आज पूर्ण स्वस्थ है। परिणामों से उत्साहित होकर, निधि के माता-पिता ने आंगनवाड़ी केंद्र में अपने अन्य बच्चों के नाम भी दर्ज करा दिये और वो दोनो अपने बच्चों को आंगनवाड़ी केंद्र भेजने के लिए प्रेरित करने और हमेशा उनकी मदद के लिए उपलब्ध रहने के लिये रेखा के आभारी हैं। यह घटना सफल प्रयास का एक अनुपम उदाहरण है किन्तु अभी भी अनेक बच्चे ऐसी सकारात्मक कहानियों का हिस्सा बनने की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

समुदाय की एकता, पोषण की विविधता

समुदाय के भीतर स्थायी परिवर्तन लाने के लिए सामुदायिक जुड़ाव प्रारंभिक बिंदु है। रेखा ने VHSNC सदस्यों के सहयोग से बाल सुरक्षा समिति बनाकर सामुदायिक भागीदारी का दोहन किया और उसे दिशा दी। बाल सुरक्षा समिति में VHSNC, AWW, ANM और समुदाय के कुछ प्रभावशाली सदस्य शामिल हैं और ये सभी बच्चों (0-5 वर्ष) के स्वास्थ्य, पोषण, स्वच्छता और शिक्षा की निगरानी के लिए मिलकर काम करते हैं ताकि पूरे समुदाय को उनके प्रयासों से लाभ मिल सके। बाल सुरक्षा समिति द्वारा गृह भेंट के दौरान 4 साल के लड़के पुरुषोत्तम की पहचान अत्यधिक कुपोषित बच्चे के रूप में की गई। बाद में ANM ने ग्राम स्वास्थ्य, स्वच्छता और पोषण दिवस (VHSND) की अपनी यात्रा के दौरान इसकी पुष्टि की। एक बार जब उसकी पोषण स्थिति की पुष्टि SAM के रूप में की गई और साथ ही ये सुनिश्चित किया गया कि उसे अन्य कोई चिकित्सीय जटिलता नहीं है, तो सामुदायिक स्तर पर उसका इलाज कराने के लिए माता-पिता को परामर्श दिया गया। परिजनों ने CSAM कार्यक्रम में पुरूषोत्तम का नाम दर्ज करा दिया। कार्यक्रम के तहत पुरुषोत्तम को पर्याप्त वजन आधारित THR देना और चिकित्सा देखभाल की जाना आरम्भ कर दिया गया साथ ही उसकी मां को उनकी स्थिति के बारे में तथा स्थिति और ज्यादा खराब होने पर उठाये जाने वाले कदमों के बारे में परामर्श दिया गया। बाद में AWW के साथ-साथ बाल सेवा समिति के सदस्यों ने पुरुषोत्तम के घर पर दौरा किया और परिजनों को हाथ धोने और व्यक्तिगत स्वच्छता की आदत को अपनाने की सलाह दी साथ ही यह निरीक्षण किया कि बच्चा ठीक तरीके से आहार ले रहा है या नहीं। धीरे धीरे पुरुषोत्तम का स्वास्थ्य बेहतर होने लगा और आठ सप्ताह के भीतर वह पूरी तरह से स्वस्थ हो गया।

हालांकि रेखा को उनके परिवार का साथ मिला लेकिन उनका सफर आसान नहीं रहा। एक दलित समुदाय से होने के कारण रेखा के सामने कई चुनौतियाँ थीं, जिनका सामना करते हुए उसने ग्रामीणों का विश्वास हासिल कर लिया।

रेखा- "एक दलित परिवार से होने के कारण, मुझे बहुत से लोगों ने पसंद नहीं किया, लेकिन मेरे काम की प्रकृति ही ऐसी थी कि मेरे लिये सभी से बात करना आवश्यक था। मैं लगातार लड़ाई की स्थिति में रहती थी, मैंने लड़ना जारी रखा और परिणाम उत्साहजनक रहा। ऊँची जाति के लोगों से भी मेरी मित्रता हो गई, वे लोग अब न केवल मेरा स्वागत करते हैं बल्कि कुर्सी और चाय भी प्रस्तुत करते हैं यह बात मेरे गांव में दलित समुदाय की महिला के लिए असामान्य हुआ करती थी। मैं अपने समुदाय की सेवा करने का अवसर पाकर अपने आपको धन्य महसूस कर रही हूं।"

अच्छे पोषण की क्षमता का उपयोग करना

नयाचूर्ण गाँव बाबई ब्लॉक के गरीब और पिछड़े गाँवों में से एक है जहाँ अधिकांश परिवार खेतों में दिहाड़ी मजदूर के रूप में काम करते है। पूरा गाँव गरीबी, अपर्याप्त पोषण आहार और बच्चों की देखभाल में जागरूकता की कमी से ग्रस्त है। इन सबके कारण गांव में बाल कुपोषण की बहुत गंभीर स्थिति बन गयी है। गांव में पोषण पुनर्वास केंद्र (NRC) और सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र (CHC) के ना होने से स्थिति की गंभीरता और बढ़ गयी है। आपात स्थिति के मामले में ग्रामीणों को स्वयं ही 23 किमी दूर स्थित NRC और 1.5 किमी दूर स्थित CHC में जाने के लिए मजबूर होना पड़ता है।

23 साल से आंगनबाडी कार्यकर्ता सरोज की शादी 20 साल की उम्र में सीमित संसाधनों वाले एक परिवार में हुई थी। उसके पति एक किसान हैं और बहुत ही कम उम्र से ही पूरे घर की जिम्मेदारी अपने कंधों पर उठाए थे किन्तु सरोज के सामाजिक कार्यकर्ता बनने और अपने समुदाय में माताओं और बच्चों की सेवा करने के सपने को साकार करने के लिए उसका साथ देने को तैयार हो गये।

गाँव में कुपोषित बच्चों की संख्या बहुत अधिक थी, सरोज ने इसके कारणों की तलाश शुरू की। इसके लिये उसने गरीब लड़कियों और महिलाओं को स्वच्छता और बच्चों की सही आहार की जरूरतों पर परामर्श देना शुरू किया। सरोज ने बच्चों के पालकों को अति कुपोषण के 'समुदाय आधारित प्रबंधन' के अंतर्गत नाम दर्ज कराने को प्रेरित करने के लिए विभिन्न गतिविधियों के आयोजन और संचालन में समुदाय के अग्रणी लोगों की भी सहायता ली। इसमें शामिल मुख्य गतिविधियां इस प्रकार थी (1) पोषण शिक्षा और संचार (2) स्थानीय रूप से उपलब्ध खाद्य पदार्थों का उपयोग करके बच्चों के लिए पौष्टिक भोजन तैयार करने में माताओं का मार्गदर्शन करना, (3) छोटे बच्चों की माताओं के साथ परिवार के सदस्यों और पिताओं को शामिल करना।

सरोज ने अपने गांव में सेवाएं प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। गाँवों में बाल स्वास्थ्य और पोषण की स्थिति को सुधारने में आंगनवाड़ी केंद्रों के महत्व को समझने के बाद, सरोज ने समुदाय आधारित प्रबंधन SAM (C-SAM)सहित अनेक कार्यक्रमों का प्रशिक्षण लिया। सरोज ने अथक प्रयासों के बाद ये पाया कि समुदाय को एक साथ लाना और उन्हें समझाना बहुत मुश्किल कार्य था किन्तु वह हार मानने को तैयार नहीं थी और उसने कुपोषण के बंधन से एक-एक व्यक्ति और परिवार को मुक्त कराने के लिए स्थानीय समुदायों के साथ मिलकर दृढ़ता के साथ काम करना शुरू कर दिया। जल्दी ही लोगों को समझ में आने लगा और अपने बच्चों की पोषण जरूरतों को समझते हुए उनके नाम CSAM के तहत दर्ज कराने लगे।

पोषण सुरक्षा

सरोज का लक्ष्य कुपोषण की पहचान करने, उसका उपचार करने और उसे रोकने के लिये, समुदाय एवं ग्राम स्तर की पोषण और स्वास्थ्य सुविधाओं की क्षमता को मजबूत कर, कुपोषित बच्चों (5 वर्ष से कम आयु) की संख्या को कम करना था।

सरोज ने सुनैना राजी की पहचान एक कुपोषित बच्ची के रूप में की, जो जिंदगी की जंग लड़ रही थी। सरोज ने सुनैना के पिता से संपर्क किया और सुनैना की स्वास्थ्यगत स्थिति के बारे में चर्चा की तथा उसे NRC में ले जाने का सुझाव दिया, लेकिन सुनैना के पिता ने उसके सुझावों पर ध्यान नहीं दिया। सरोज लगातार उनसे मिलने जाती रही और आखिरकार उन्हें विश्वास दिलाने में सफल रही कि सुनैना की स्थिति में आसानी से सुधार हो सकता है। परिणामस्वरूप सुनैना को तुरंत पोषण पुनर्वास केंद्र में भर्ती कराया गया, जहां उसका इलाज हुआ और उसकी हालत में सुधार हुआ।

NRC से छुट्टी मिलने के तुरंत बाद, सुनैना को CSAM कार्यक्रम के तहत रजिस्टर कर लिया गया, सरोज सुनैना के परिवार को आहार की सही विधियों के बारे में परामर्श देने, साप्ताहिक वजन माप लेने, घर ले जाने हेतु अतिरिक्त राशन (THR), आवश्यक दवाएं और पूरक आहार देने के लिये सुनैना के घर जाने लगी। सुनैना अब दिन में तीन बार ठोस भोजन और दो अल्पआहार ले रही थी और उसे अच्छी भूख भी लगने लगी थी। अंततः उसके स्वास्थ्य में सुधार होने लगा और वह धीरे धीरे गंभीर से मध्यम और अंत में सामान्य पोषण की स्थिति में आ गयी।

सरोज को यह देखकर बेहद खुशी हुई कि सुनैना आखिरकार सामान्य विकास और अच्छे स्वास्थ्य की राह पर आ गई थी। इतना ही नहीं, उसे और उसके परिवार के लोगों को पोषण का अच्छा ज्ञान भी हो गया और पूरा परिवार बहुत खुश था। सुनैना की मां ने बताया कि *"मैं बहुत ही सुकून महसूस कर रही हूं कि सुनैना अब पूरी तरह स्वस्थ है। वह अधिक आहार ले रही है और मैं उसे विविध प्रकार का आहार दे पा रही हूं इसके लिये सरोज दीदी को दिल से धन्यवाद देती हूं।"*

उभरते मार्गदर्शक

21 वर्षीय सुमित्रा अपने 5 सदस्यों के परिवार के साथ नयाचुर्ना गांव में रहती है। उसने हाल ही में एक बच्ची को जन्म दिया है, जो अभी 6 हफ्ते की है। अपने नियमित कर्तव्यों का पालन करते हुए, सरोज ने घर पर प्रसवोत्तर देखभाल और पोषण संबंधी जानकारियां देने के लिए सुमित्रा के घर का दौरा किया। इस तरह की एक भेंट के दौरान सरोज ने सुमित्रा के शिशु को लगातार रोते हुए देखा। मित्रवत बातचीत के जरिये सरोज ने इसका कारण जानने की कोशिश की तब सुमित्रा ने बताया कि पिछले कुछ दिनों से बच्ची को बार बार दस्त हो रहे है और उसका शरीर भी गर्म है और वह रोना बंद नहीं कर रही है। सरोज चिंतित हो गयी उसने जानना चाहा कि क्या सुमित्रा अपने बच्चे को स्तनपान करा रही है, और क्या वह बच्चे को अतिरिक्त कुछ और पीने को दे रही है। सुमित्रा ने हिचकिचाते हुए बताया कि वह घर का बना काढ़ा बनाकर पिलाने की सोच रही है। सरोज ने तुरंत उसे रोका और उसे स्तनपान जारी रखने के लिए राजी किया और ORH के घोल का उपयोग और साथ ही साथ ही इस घोल को पिलाने के सही तरीके के बारे में बताया। शुरूआत में सुमित्रा थोड़ा हिचकिचाती रही किन्तु सरोज ने समझाना जारी रखा और अंततः उसे और उसके परिवार को 'केवल स्तनपान' कराते रहने के लिये राजी करने में कामयाब रही। हालांकि सरोज स्वंय पूरी तरह से निश्चिंत नहीं हुई और कुछ दिनों पश्चात पुनः उसके घर गई और ये देखकर उसे बहुत खुशी हुई कि सुमित्रा ने 'केवल स्तनपान' कराने और ORS के घोल को उसकी सलाह के अनुसार पिलाने की बात को याद रखा था। बच्ची का स्वास्थ्य भी धीरे - धीरे सुधार पर था और उस पर डायरिया के कोई लक्षण दिखाई नहीं रहे थे। सुमित्रा भी खुश थी कि उसकी बच्ची का वजन बढ़ रहा था और वो 'केवल स्तनपान' के महत्व को समझ गयी थी। परिणाम से खुश होकर सुमित्रा भी अन्य माताओं को परामर्श देने में सरोज की सहायता करने लगी।

जीवन का बदलना

04

मध्य प्रदेश के होशंगाबाद जिले के अंखमऊ गाँव में लगभग 458 परिवार हैं और यहां अधिकांश ग्रामीण खेतिहर मजदूर हैं। गाँव में लोगो के जीवन यापन की स्थिति अत्यंत दयनीय है क्योंकि यह क्षेत्र गरीबी से ग्रस्त है, जिसके कारण गाँव में कुपोषण अपने सबसे बुरे रूप में मौजूद है। हालाँकि, अंखमऊ में हाल के वर्षों में ग्रामीणों की स्थिति में सुधार के लिए विभिन्न कदम उठाए गये हैं।

अंखमऊ गाँव में कुपोषण से जुड़ी समस्याओं से लड़ने के लिये, आंगनबाड़ी कार्यकर्ता गिरिजा परशाही ने गाँव में गंभीर कुपोषण के समुदाय-आधारित प्रबंधन के रास्ते पर चलने का विचार किया। उसने समुदाय आधारित देखभाल को बढ़ावा देकर और स्थानीय रूप से उपलब्ध खाद्य उत्पादों से उच्च पोषण मूल्य के व्यंजनों को बनाने की विधियां सिखा कर गांव में बच्चों और माताओं की पोषण स्थिति को बेहतर बनाया। 10 साल से अधिक समय से गिरिजा गाँव में माँ और बच्चों के स्वास्थ्य और पोषण से संबंधित मुद्दों पर काम कर रही है और वह अक्सर पंचायती राज संस्थानों में इन मुद्दों पर चर्चा कर इनके स्थायी समाधान खोजने के प्रयास करती है।

परिवर्तन के लिये प्रयासरत - CSAM

गिरिजा ने अपने गाँव के कुपोषित दिव्यांग बच्चे राहुल के जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। राहुल के परिजन निराश थे और उन्हें लगता था कि राहुल की हालत कभी नहीं सुधर सकती। गिरिजा राहुल की स्थिति देखकर बहुत दुखी हुई और उसके स्वास्थ्य और पोषण की स्थिति को बेहतर बनाने की दिशा में मदद करने के लिए उसने राहुल के माता पिता से समुदाय आधारित अति गंभीर कुपोषण प्रबंधन (CSAM) के तहत राहुल का नाम दर्ज कराने का आग्रह किया। गिरिजा नियमित रूप से राहुल के परिवार से मिलने जाती और उन्हें समझाती कि किस प्रकार राहुल की देखभाल घर पर की जाना चाहिये। उसने राहुल की माँ को पौष्टिक व्यंजन बनाना सिखाया जो स्थानीय रूप से उपलब्ध खाद्य पदार्थों और आंगनवाड़ी केंद्र में प्रदान किए जाने वाले THR से तैयार किये जा सकते है।

गिरिजा के अथक प्रयासों से, आंगनबाडी केंद्र में राहुल का परीक्षण किया गया और CSAM कार्यक्रम के तहत उसका नाम दर्ज किया गया। उन्हें दवाओं के साथ-साथ THR भी दिया गया था जिससे उसकी मां अब उसके लिए अलग-अलग व्यंजन तैयार करने में सक्षम थीं। राहुल के परिवार ने सही जानकारी और उचित देखभाल के महत्व को समझा और जाना कि सीमित संसाधनों में भी स्वास्थ्य और पोषण हासिल करना संभव है।

चूंकि राहुल के माता-पिता दिहाड़ी मजदूर थे, इसलिए वे उसे आंगनबाड़ी केंद्र में लाने ले जाने में भी सक्षम नहीं थे। गिरिजा ने उन्हें आश्वस्त किया और राहुल को आंगनबाड़ी केंद्र ले जाने और दिन में माता पिता के काम पर रहने के दौरान उसकी देखभाल करने का जिम्मा ले लिया। चूंकि राहुल दिव्यांग था, इसलिए आंगनबाड़ी सहायिका उसे प्रतिदिन केंद्र पर लाती या फिर देखभाल करने और भोजन कराने के लिए उसके घर जाती। धीरे धीरे राहुल का वजन बढ़ने लगा और उनके पोषण स्तर में सुधार हुआ। राहुल बहुत प्यारा बच्चा है उसका मुस्कुराता हुआ चेहरा गिरिजा को यह विश्वास दिलाता है कि एक दिन वह कम से कम अपनी बुनियादी देखभाल तो खुद ही कर पाएगा।

खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने वाली पंचायत

एक गरीब परिवार की 3 साल की बच्ची कामिनी, अपने घर पर अति गंभीर कुपोषण से ग्रस्त पाई गई। खराब पोषण, अस्वच्छता और वित्तीय अस्थिरता ने कामिनी को बीमारियों के प्रति संवेदनशील बना दिया था । उसकी मां मदद के लिए गिरिजा के पास पहुंची। गिरिजा ने उसकी जांच की और पाया कि वह SAM थी और उसका शरीर पतला और पीला था। गिरिजा ने तुरंत कामिनी का नाम CSAM कार्यक्रम में दर्ज कर लिया, ताकि उसे उचित इलाज मिल सके। मात्र 3 महीने की अवधि में, कामिनी की पोषण स्थिति SAM से MAM तक पहुंच गई। हालांकि, यह एक आसान काम नहीं था और गिरिजा को इसके लिये बहुत प्रयास करने पड़े। गिरिजा ने कामिनी के परिवार को भोजन उपलब्ध कराने के लिए पंचायत सदस्यों की सहायता ली जिससे यह सुनिश्चित हो गया कि उसके परिवार के पास कामिनी को नियमित रूप से खिलाने के लिए पर्याप्त भोजन है। उसने कामिनी की दादी और माँ को विभिन्न व्यंजनों के बारे में सिखाया जो तैयार करने में आसान थे और जिन्हें स्थानीय रूप से उपलब्ध सब्जियों और फलों से तैयार किया जा सकता था। कामिनी की माँ ने पौष्टिक आहार और विभिन्न पौष्टिक व्यंजनों के महत्व के बारे में जाना। छह महीने के भीतर, कामिनी एक स्वस्थ वजन सीमा तक पहुंच गई और SAM/MAM से उबर गई। “कठिन समय के दौरान कामिनी को पर्याप्त पोषण मिलता रहे ये सुनिश्चित करना मेरी प्राथमिकता थी ” - गिरिजा का कहना था।

बेहतर आहार के साथ क्षमता वृद्धि

मध्य प्रदेश में खंडवा जिले के खालवा ब्लॉक का एक गांव खालवा-5, कोरकू जनजातियों का प्रमुख आवास है। कोरकू जनजाति मुख्य रूप से खेतिहर मजदूर हैं जो अक्सर काम की तलाश में पलायन करते रहते हैं। प्रवास करते रहना उन कारणों में प्रमुख है जो बच्चों में कुपोषण की संभावना को बढ़ाता है, क्योंकि माता-पिता अक्सर काम पर जाते समय अपने बच्चों को घर पर छोड़ देते हैं और उन्हें घर पर खिलाने वाला कोई नहीं होता है। गरीबी और भोजन की खराब आदतों से यह समस्या और अधिक बढ़ जाती है।

गंभीर स्थिति के बावजूद, खालवा गांव की आंगनवाड़ी कार्यकर्ता रेणु सोनी ने अपने गांव में कुपोषण की स्थिति से निपटने की दिशा में अपने परामर्श और सामाजिक व्यवहार परिवर्तन के माध्यम से एक सकारात्मक वातावरण बनाया। लगभग 17 साल पहले शादी करके वह गांव आई थी और अब दो बच्चों की मां है। कला में स्नातक रेणु पिछले 13 वर्षों से आंगनवाड़ी कार्यकर्ता के रूप में काम कर रही हैं। गाँव में जागरूकता बढ़ाने और स्वस्थ जीवन जीने के लिए परिवारों के साथ एक मजबूत बंधन विकसित करने के लिए रेणु सतत प्रयास करती रहती है।

जीवन जीने का नया तरीका!

3 साल का लड़का, राजवीर, अपने दादा-दादी के साथ रहता है क्योंकि उसके माता-पिता काम के लिए औरंगाबाद चले गए हैं। उनके दादा-दादी भी खेतिहर मजदूर है और आजीविका के लिए बहुत थोड़ा कमा पाते हैं। उपलब्ध संसाधनों से वे अपनी और राजवीर की ठीक से देखभाल नहीं कर पा रहे हैं। परिवार को अक्सर दिन में

दो बार भोजन पाने के लिये संघर्ष करना पड़ता है। इन परिस्थितियों में उनके लिए अपने पोते को खाना खिलाना और उसे पौष्टिक आहार उपलब्ध कराना बहुत मुश्किल था। दादी जो खाना खिलाती थी वह उसके लिये पर्याप्त नहीं था , धीरे-धीरे राजवीर की तबीयत बिगड़ने लगी और वह गंभीर रूप से कुपोषित हो गया।

दादी ने देखा कि राजवीर दिन-ब-दिन पतला और कमजोर होता जा रहा था। उसे लग रहा था कि वह ठीक नहीं है, लेकिन उसे पता नहीं था कि आगे क्या करना है और इसलिए वह आंगनवाड़ी में अपने पोते की जांच कराने गई। आंगनवाड़ी कार्यकर्ता रेणु ने उसकी जांच की और उसकी दादी से NRC में उसे भर्ती करने के लिए कहा, लेकिन दादी ने इनकार कर दिया क्योंकि उसके लिए काम छोड़ना और पोते के साथ NRC में रहना मुश्किल था। रेणु ने उसकी काउंसलिंग की और उसे मदद करने का आश्वासान दिया। उसने समझाया कि राजवीर को स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं से उबारने के लिये कुछ समय के लिये SAM में भर्ती होने की आवश्यकता होगी बाद में फिर CSAM के तहत घर पर ही उसकी देखभाल जारी रखी जा सकती है। रेणु ने राजवीर की दादी को समझाया कि उसे न केवल दवाएं और देखभाल प्रदान की जाएगी बल्कि घर ले जाने के लिये राशन भी दिया जाएगा जिससे पोषक भोजन की उसकी दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति होगी। राजवीर की दादी ने रेणु की सलाह मानते हुए राजवीर को तुरंत SAM में भर्ती कर दिया। रेणु ने दादी को दिये गये आश्वासन के अनुसार कुछ स्थानीय नेताओं से अनुरोध किया और कुछ दिनों के लिए राजवीर के परिवार की सहायता के लिए कुछ पैसे एकत्र किए। राजवीर को छत्ब् में भर्ती कराया गया और बाद में राजवीर को CMAM कार्यक्रम के तहत नामांकित किया गया और स्थानीय स्तर पर प्रबंधन किया गया था, रेणु नियमित रूप से राजवीर के घर भी जाती थी और उसके दादा-दादी को सलाह देती थी कि उसे कैसे खिलाएं और कैसे उसकी अच्छी देखभाल करें। रेणु आंगनवाड़ी केंद्र में अपना काम पूरा करने के बाद राजवीर से मिलने जाती थी और उसके साथ रहती थी ताकि उसकी दादी कुछ समय के लिए काम पर जा सकें। अब राजवीर के स्वास्थ्य में काफी सुधार हुआ है जो कि रेणु के लगातार प्रयासों से संभव हुआ है।

स्वस्थ जीवन की नींव !

दो साल का बच्चा बबलू बहुत कमजोर था और जब रेणु ने उसे देखा तब वो चलने में असमर्थ था। उनका परिवार बहुत कठिन समय से गुजर रहा था और उनकी 22 वर्षीय मां पर उसे और उसके दो भाई-बहनों को अकेले पालने की जिम्मेदारी थी।

बबलू की माँ बेरोजगार थी और उसे अपने बच्चों के लिए पौष्टिक भोजन उपलब्ध कराना मुश्किल हो रहा था; जल्द ही बबलू की तबीयत बिगड़ने लगी। पहले तो उसकी मां सोचा कि यह छोटी सी बीमारी है जो ठीक हो जाएगी। किन्तु उसकी बैचेनी बढ़ने लगी क्योंकि बबलू की तबीयत लगातार खराब होती जा रही थी। उसके पास बबलू के इलाज के लिए पैसे नहीं थे और उसे लग रहा था कि वो बबलू को खो देगी।

एक दिन रेणु को ग्रामीणों से बबलू के बारे में पता चला तो वह उसके घर गई। बबलू को देखते ही वो समझ गई कि वह अति गंभीर रूप से कुपोषित है और उसे तुरन्त ही सीधे NRC ले गई जहां डॉक्टर ने उसकी जांच की और पुष्टि की कि उसकी हालत बहुत गंभीर है और उसे तत्काल उपचार की आवश्यकता है।

तत्काल उनका इलाज शुरू हुआ और एक हफ्ते में हालत में कुछ सुधार हुआ। उसकी माँ उसके स्वास्थ्य को स्थिर होते देखकर खुश हुई जिसके बाद बबलू का नाम CSAM के तहत दर्ज किया गया। रेणु ने पंचायत के एक सदस्य की मदद से बबलू की माँ को मौसमी

सब्जियों और फलों के बीज उपलब्ध कराए। उसने बबलू की माँ को ये भी सिखाया कि कैसे सब्जियाँ उगाएँ और अपने बच्चों को उचित तरीके से भोजन देने की आदतें कैसे अपनाएं। पंचायत सदस्यों द्वारा सब्जियां उगाने के लिये प्रदान की गई सार्वजनिक जमीन पर बबलू की माँ ने कुछ सब्जियां भी उगाईं । ग्यारह महीने बाद, बबलू पूरी तरह से ठीक हो गया और बिल्कुल अलग बच्चे के रूप में परिवर्तित हो गया।

COALITION
Food & Nutrition
SECURITY

The Coalition for Food and Nutrition Security (CFNS)

B-40, NRPC COLONY, BLOCK- B, QUTAB INSTITUTIONAL AREA,
NEW DELHI - 110016

011-41058548 info@nutritioncoalition.org.in http://www.nutritioncoalition.org.in/

@cfnsnewdelhi @Cfns Delhi (The Coalition) @The Coalition for Food and Nutrition Security